

॥ श्रीमूकाम्बिकाष्टकम् ॥

नमस्ते जगद्धात्रि सदब्रह्मरूपे
नमस्ते हरोपेन्द्रधात्रादिवन्दे ।
नमस्ते प्रपन्नेष्टदानैकदक्षे
नमस्ते महालक्ष्मि कोलापुरेशि ॥ १ ॥

विधिः

कृत्तिवासा हरिर्विश्वमेतत्
-हरिर्विश्वमेतत्
सृजत्यति पातीति यत्तत्प्रसिद्धं कृपालोकनादेव ते शक्तिरूपे
नमस्ते महालक्ष्मि कोलापुरेशि ॥ २ ॥

त्वया मायया व्याप्तमेतत्समक्षं समस्तं धृतं लीलया देवि कुक्षौ हि विश्वम् । विश्वम् स्थितां
बुद्धिरूपेण सर्वत्र जन्तौ
नमस्ते महालक्ष्मि कोलापुरेशि ॥ ३ ॥

यया भक्तवर्गा हि लक्ष्यन्त एते
त्वयाऽत्र प्रकामं
कृपापूर्णदृष्ट्या ।
अतो गीयसे
देवि लक्ष्मीरिति त्वं
नमस्ते महालक्ष्मि कोलापुरेशि ॥ ४ ॥

पुनर्वाक्पटुत्वादिहीना हि
मूका
नरास्तैर्निकामं खलु प्रार्थयसे यत्
निजेष्टाप्तये तेन
मूकाम्बिका त्वं
नमस्ते महालक्ष्मि कोलापुरेशि ॥ ५ ॥

यदद्वैतरूपात्परब्रह्मणस्त्वं
समुत्था
पुनर्विश्वलीलोद्यमस्था ।
तदाहर्जनास्त्वां
च गौरीं कुमारीं
नमस्ते महालक्ष्मि कोलापुरेशि ॥ ६ ॥

हरेशादि
देहोत्थतेजोमयप्र
स्फुरच्चक्रराजाख्यलिङ्गस्वरूपे ।
महायोगिको लर्षिहृत्पद्मगेहे
नमस्ते महालक्ष्मि कोलापुरेशि ॥ ७ ॥

नमः शङ्खचक्राभयाभीष्टहस्ते
नमः त्र्यम्बके गौरि पद्मासनस्थे । नमस्तेऽम्बिके
नमः स्वर्णवर्णे प्रसन्ने शरण्ये
नमस्ते महालक्ष्मि कोलापुरेशि ॥ ८

इदं स्तोत्ररत्नं कृतं सर्वदेवै -सर्वदेवै
हृदि त्वां समाधाय लक्ष्म्यष्टकं यः ।
पठेन्नित्यमेष व्रजत्याशु लक्ष्मीं
सुविद्यां च सत्यं भवत्याः प्रसादात् ॥प्रसादात् ९ ॥

श्री मूकाम्बिका अष्टकम हिंदी अर्थ

प्राचीन स्कंद पुराण से निम्नलिखित स्तोत्रम श्री मूकाम्बिका (कोलापुरेशी) की आराधना में है। यदि प्रतिदिन जप किया जाए, तो ऋषि आश्वासन देते हैं, यह दिव्य मार्गदर्शन, सद्भाव और समृद्धि लाएगा, हे ब्रह्मांड की माँ, सर्वोच्च ब्राह्मण, हम आपको प्रणाम करते हैं, जिनकी पूजा शिव, उपेन्द्र, ब्रह्मा और अन्य देवताओं द्वारा की जाती है। आपको प्रणाम जो आपकी शरण में आए लोगों की इच्छाओं को पूरा करते हैं। हे कोलापुरा की देवी महालक्ष्मी, आपको प्रणाम। 1

भगवान ब्रह्मा ने इस ब्रह्माण्ड की रचना की है। भगवान शिव इसे नष्ट कर देते हैं। भगवान विष्णु इसका विरोध करते हैं। लेकिन हे महालक्ष्मी, आपकी कृपा दृष्टि से, जिसका रूप स्वयं शक्ति है, वे वे सभी कार्य करते हैं। हे कोलापुरा की देवी महालक्ष्मी, आपको प्रणाम। 2

यह संपूर्ण ब्रह्मांड आपकी दिव्य माया से व्याप्त है, जबकि हे देवी, आप संपूर्ण ब्रह्मांड को अपने गर्भ में चंचलतापूर्वक धारण करती हैं। आप प्रत्येक प्राणी में बुद्धि के रूप में निवास करते हैं। हे कोलापुरा की देवी महालक्ष्मी, आपको प्रणाम। 3

हे देवी, चूँकि आपने अपने सभी भक्तों पर अपनी कृपापूर्ण दृष्टि डाली है, इसलिए आप महालक्ष्मी कहलाती हैं। हे कोलापुरा की देवी महालक्ष्मी, आपको प्रणाम। 4

जिनके पास बुद्धि और अभिव्यक्ति की शक्ति का अभाव है वे आपकी कृपा के लिए ईमानदारी से प्रार्थना करते हैं और आप उन्हें प्रतिभा और ज्ञान प्रदान करके बड़ा करते हैं। अतः आप कुमारी हैं। हे कोलापुरा की देवी महालक्ष्मी, आपको प्रणाम। 5

श्रीचक्र, रहस्यवादी प्रतीकों का राजा, जो भगवान महाविष्णु, भगवान शिव और अन्य देवताओं के तेज से उत्पन्न हुआ, आपका स्वरूप है। 6

हे कोलापुरा की देवी महालक्ष्मी, जो महायोगी कोला महर्षि के कमल हृदय में निवास करती हैं, आपको प्रणाम। हे देवी, जो अपनी चार भुजाओं में शंख, चक्र और रहस्यमय प्रतीक अभय और अभीष्ट मुद्रा धारण करती हैं, उन्हें प्रणाम। आपको साष्टांग प्रणाम, माँ, जो पद्मासन की रहस्यमय मुद्रा में बैठी है। आपको साष्टांग प्रणाम, सभी का मनोहर आश्रय, स्वर्णिम रंग, आनंदमय। हे कोलापुरा की देवी महालक्ष्मी, आपको प्रणाम। 7

श्री मूकाम्बिका की कृपा उन लोगों को आशीर्वाद देगी जो प्रतिदिन इस महान स्तोत्रम का जप करते हैं जो सभी देवों के समर्पित दिलों से निकलता है, समृद्धि और ज्ञान के साथ। यह निश्चित रूप से जान लें। 8